

सोमवार व्रत

कथा SOMVAR

VRAT

KATHA

PDF

किसी शहर में एक धनी व्यापारी रहता था। उनका कारोबार दूर-दूर तक फैला हुआ था। नगर के सभी लोग उस व्यापारी का बहुत सम्मान करते थे। इतना सब कुछ होने के बाद भी व्यापारी बहुत दुखी था क्योंकि उसके कोई पुत्र नहीं था। जिसके कारण व्यवसाय के उत्तराधिकारी की चिंता उनके मरने के बाद उन्हें हमेशा सताती रहती थी।

पुत्र प्राप्ति की कामना से व्यापारी प्रत्येक सोमवार को भगवान शिव का व्रत और पूजन करता था और शाम को शिव मंदिर जाकर शिव के सामने घी का दीपक जलाता था। उसकी भक्ति देखकर माता पार्वती प्रसन्न हुईं और भगवान शिव से उस व्यापारी की मनोकामना पूरी करने का अनुरोध किया। भगवान शिव ने कहा- इस संसार में सभी को उसके कर्मों के अनुसार फल मिलता है। जो जीव जैसा कर्म करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है। शिवजी के बहुत समझाने पर भी माता पार्वती नहीं मानीं और वे बार-बार शिवजी से उस व्यापारी की इच्छा पूरी करने की गुहार लगाती रहीं। अंत में माता की विनती देखकर भगवान भोलेनाथ को उस व्यापारी को पुत्र प्राप्ति का वरदान देना पड़ा। वरदान देने के बाद भोलेनाथ ने

माता पार्वती से कहा- आपके अनुरोध पर मैंने पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया है, लेकिन यह पुत्र 16 वर्ष से अधिक जीवित नहीं रहेगा। उसी रात भगवान शिव ने उस व्यापारी के सपने में दर्शन दिए और उसे पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया और उसके पुत्र के 16 वर्ष तक जीवित रहने की बात भी बताई।

भगवान के वरदान से व्यापारी खुश था, लेकिन बेटे की अल्पायु की चिंता ने उस खुशी को खत्म कर दिया।

व्यापारी पहले की तरह सोमवार को भगवान शिव का व्रत करता रहा। कुछ महीनों के बाद उसके घर एक बहुत ही सुंदर बालक ने जन्म लिया, घर खुशियों से भर गया। पुत्र जन्म की रस्म बड़ी धूमधाम से मनाई गई, लेकिन व्यापारी पुत्र के जन्म से बहुत खुश नहीं था क्योंकि वह पुत्र की अल्पायु का रहस्य जानता था। जब बेटा 12 साल का हुआ तो व्यापारी ने उसे मामा के पास पढ़ने के लिए वाराणसी भेज दिया। लड़का अपने मामा के साथ शिक्षा ग्रहण करने गया था। मामा-भांजे रास्ते में जहां भी विश्राम के लिए रुकते वहां यज्ञ करते और ब्राह्मणों को भोजन कराते थे। एक लम्बी यात्रा के बाद मामा और भतीजा एक नगर में पहुँचे। उस दिन नगर के राजा की पुत्री का विवाह था, जिसके कारण सारे नगर को सजाया गया था। तय समय

पर बारात आ गई लेकिन दूल्हे के पिता अपने पुत्र के एक आंख से अंधे होने के कारण बहुत चिंतित थे। उसे डर था कि कहीं राजा को इस बात का पता चल गया तो वह शादी से इंकार न कर दे। इससे उसकी बदनामी भी होगी। दूल्हे के पिता ने व्यापारी के बेटे को देखा तो उसके मन में एक विचार आया। उसने सोचा क्यों न इस लड़के को दूल्हा बनाकर राजकुमारी से विवाह करा दूं। विवाह के बाद मैं उसे धन देकर विदा कर दूंगा और राजकुमारी को अपने नगर ले जाऊंगा।

इस संबंध में दूल्हे के पिता ने लड़के के मामा से बात की। मामा ने पैसे के लालच में दूल्हे के पिता की बात मान ली। लड़के ने दूल्हे का वेश बनाकर राजकुमारी से विवाह कर लिया। राजा ने ढेर सारा धन देकर राजकुमारी को विदा किया। विवाह के बाद जब लड़का राजकुमारी को लेकर वापस आ रहा था तो वह सच छुपा न सका और उसने राजकुमारी के मुखपृष्ठ पर लिख दिया- राजकुमारी, तुम्हारा विवाह मेरे साथ हुआ था, मैं वाराणसी पढ़ने जा रहा हूँ और अब वह युवक जिसे तुम पत्नी बनना है, वह काना है।

जब राजकुमारी ने अपने घूंघट पर लिखा पढ़ा तो उसने अंधे लड़के के साथ जाने से इनकार कर दिया। सब कुछ

जानकर राजा ने राजकुमारी को महल में ही रखा। उधर, लड़का अपने मामा के साथ वाराणसी पहुंचा और गुरुकुल में पढ़ने लगा। जब वे 16 वर्ष के थे, तब उन्होंने एक यज्ञ किया। यज्ञ के अंत में ब्राह्मणों को भोजन कराया गया और खूब अन्न-वस्त्र दान किया गया। रात में वह अपने बेडरूम में सो गया। शिव के वरदान के अनुसार उनकी नींद में ही उनके जीवन-पक्षी उड़ गए। सूर्योदय के समय मामा मृत भांजे को देखकर रोने और पीटने लगे। आसपास के लोग भी जमा हो गए और दुख व्यक्त करने लगे।

उधर से गुजरते हुए बालक के मामा का रोना और विलाप करना भगवान शिव और माता पार्वती ने भी सुना। पार्वती ने भगवान से कहा - प्राणनाथ, मैं उनके रोने की आवाज सहन नहीं कर सकती। आपको इस व्यक्ति की पीड़ा को दूर करना चाहिए। भगवान शिव जब अदृश्य रूप में पार्वती के समीप गए तो भोलेनाथ ने पार्वती से कहा- यह उसी व्यापारी का पुत्र है, जिसे मैंने 16 वर्ष की आयु में वरदान दिया था। माता पार्वती ने फिर भगवान शिव से उस बालक को जीवनदान देने की विनती की। माता पार्वती के अनुरोध पर भगवान शिव ने बालक को जीवित होने का वरदान दिया और कुछ ही क्षणों में वह जीवित हो उठा।

पढ़ाई पूरी करने के बाद लड़का अपने मामा के साथ अपने शहर की ओर चल पड़ा। चलते चलते दोनों उसी शहर पहुंचे, जहां उन्होंने शादी की थी। उस नगर में भी यज्ञ का आयोजन किया। उधर से गुजरते हुए नगर के राजा ने यज्ञ होते देखा और लड़के और उसके मामा को तुरंत पहचान लिया। यज्ञ की समाप्ति पर राजा ने मामा और लड़के को महल में ले जाकर कुछ दिन महल में रखा और बहुत सा धन, वस्त्र आदि देकर उन्हें राजकुमारी के साथ विदा किया।

इधर व्यापारी और उसकी पत्नी भूखे-प्यासे बेटे का इंतजार कर रहे थे। उन्होंने मन्नत मानी थी कि अगर उन्हें अपने बेटे की मौत की खबर मिली तो दोनों अपने प्राण त्याग देंगे, लेकिन जैसे ही उन्होंने अपने बेटे के जिंदा लौटने की खबर सुनी तो उन्हें बहुत खुशी हुई। वह अपनी पत्नी और मित्रों के साथ नगर के द्वार पर पहुंचा। अपने बेटे की शादी की खबर सुनकर बहू राजकुमारी को देखकर उनकी खुशी का ठिकाना नहीं रहा। उसी रात भगवान शिव ने व्यापारी के सपने में दर्शन दिए और कहा- हे श्रेष्ठी, मैंने तुम्हारे सोमवार के व्रत और कथा सुनने से प्रसन्न होकर तुम्हारे पुत्र को लंबी आयु प्रदान की है।

अपने बेटे की लंबी उम्र जानकर व्यापारी बहुत खुश हुआ।

सोमवार का व्रत करने से व्यापारी के घर में सुख-समृद्धि लौट आई। शास्त्रों में लिखा है कि जो स्त्री-पुरुष सोमवार का व्रत करते हैं और व्रत कथा सुनते हैं उनकी सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं।

patilnbox.com